रात्रि क्लास 8-10-68 ओमशान्ति विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है?

बाप को याद करने में हर प्रकार की रेस्ट मिलती है 2। जन्मों के लिये। क्योंकि आधा कल्प अनरेस्ट का रहा है। बाप आकर आधा कल्प पूरी रेस्ट देते हैं। कोई हंगामा कोई तकलीफ आदि कुछ भी नहीं। और यह भी बच्चे समझते हैं तमोप्रधान से अनरेस्ट हो जाते हैं। सतोप्रधान हैं तो रेस्ट में रहते हैं। बाप को याद करते करते रेस्ट में, स्वीटहोम में निवास करते हैं। जिनका आवराउन्ड पार्ट है वह फिर वहां जल्दी नहीं ठहरते हैं। चले आते हैं। रेस्ट-लेस को ही अशान्ति, रेस्ट को शान्ति कहा जाता है। शान्तिधाम में सभी जाकर रेस्ट में रहते हैं। गाया भी जाता है शान्तिधाम सुखधाम। दोनो में रेस्ट है वास्तव में। सुखधाम में आत्माओं को शरीर मिलता है तो भी रेस्ट में हैं। यहां खांसी आदि होती है तो वह भी अनरेस्ट ठहरी ना। वहां यह कुछ भी नहीं होता। रेस्ट और अनरेस्ट का मूल कारण है विकार। विकारों से दुनिया में अनरेस्ट होते2 बहुत अनरेस्ट हो जाते हैं। तब फिर बाप आकर सभी को रेस्ट देते हैं। उच्च ते उच्च बाप ही यह उच्चा वरसा देते हैं। सुख भी है तो रेस्ट भी है। इसलिये बाप कहते हैं मेरे को याद करो तो जो अनरेस्ट करने वाले हैं वह निकल जावेंगे। खाद निकल जावेगी। नाम भी रखा हुआ है गोल्डेन एज और सिल्वर एज। बाप यह दवाई देते हैं बाप की याद रूपी योग-अग्नि से सारा चिकड़ा निकलजल जावेगा। यह है अन्तिम जन्म तो पवित्र बनना है। सभी जैसे कि भट्ठी में पड़ जाते हैं औटोमेटकली। आग में जलते हैं ना। यज्ञ कुण्ड होते हैं ना।

यह कल्प-वृक्ष का डिटेल समाचार सुनाया जाता है। उस झाड़ की इतनी डिटेल नहीं समझाई जाती है। बीज से झाड़ निकल आता। यह फिर है वैराईटी मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़। यह बाप दादा है ना। खांसी किसको होना है? (दादा को) शरीर को कुछ न कुछ होता रहेगा जब तक योगबल से विटामिन उतर जाये। हिसाब-किताब चुकुत हो जाये तब तक कुछ न कुछ होता रहता है।

मुख्य बात है बाप को पहचानने की। बाप अपनी पहचान देते हैं। फिर रचना के आदि मध्य अन्त की पहचान भी बाप को देनी पड़ती है। अपना भी परिचय देते हैं सृष्टि के आदि मध्य अन्त का भी परिचय देते हैं। फिर डायरेक्शन देते हैं सतयुग में चलना है तो देवीगुण चाहिये। यह अन्तिम जन्म है। इसमें ही सतोप्रधान बनना है। 84 जन्मों में कुछ न कुछ कम होता आया है। फिर अभी पूरा सतोप्रधान बनना है। जो जो पूरा बन जाते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सतोप्रधान बनने से फिर सतोप्रधान प्रिन्सेज बन जाते हैं।

तुम बच्चों को बाप थोड़ा दूर है। कोई कहां, कोई कहां है। बाबा के तो एकदम बगल में बैठे हैं तो भी पुरुषार्थ में समय इतना ही लगता है जितना औरों को लगता है। भल बाजू में बैठे हैं यह समझते हुये भी फिर भूल जाता हूं। विवेक कहते हैं घड़ी-घड़ी याद नहीं पड़ सकते। नहीं तो कर्मातीत अवस्था हो जाये। माया याद करने न देती है। सभी तूफानों का अनुभव होता तब तो समझा सकेंगे। यह यह होगा। चाहूं निरन्तर उनको ही याद करें, अच्छा मैं बाबा ही हूं। ऐसे भी नहीं कर सकता हूं। अपने को बाबा कह नहीं सकता हूं। दादा है ना। तो जैसे तुम बच्चों को याद करना पड़ता है वैसे इनको भी याद करना पड़ता है। जो अच्छे पुरुषार्थी हैं वह बाबा को जैसे फालो करते हैं। याद करना और फिर अपने को बाबा समझना ऐसे भी तो हो नहीं सकता। इसलिये बाबा को भी बाबा को याद करना पड़ता है। बहुत सहज है याद करना यह समझता भी हूं फिर भी भूल जाता हूं। जैसे तुमको याद करने के लिये मेहनत करनी पड़ती है। इस दादा को भी मुझे याद करने लिये इतनी ही मेहनत करनी पड़ती है। ऐसे मत समझना यह दादा मेहनत नहीं करते हैं। नहीं। इनको भी बहुत ही मेहनत करनी पड़ती है। सबसे जल्दी मेहनत करते हैं तब तो यह बनते हैं ना। तुम बच्चों को भी इनको ही फालो करना है। इतनी ही मेहनत करनी है।

अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

*-:****:-*